ख़य्याम की मधुशाला

['रुबाइयात उमर ख़य्याम' का पद्यबद्ध हिंदी रूपांतर]

सन् १९३३ में

अनूदित

बच्चन की अन्य प्रकाशित रचनाएँ

१—एकांत संगीत
एक सौ गीतों का संग्रह

२—निशा निमंत्रण
एक सौ गीतों का संग्रह

३—मधुकलश
कविताओं का संग्रह

४—मधुबाला
कविताओं का संग्रह

५—मधुशाला
रुबाइयों का संग्रह

६—तेरा हार
प्रारंभिक कविताओं का संग्रह

इनके विषय में विशेष जानकरी के लिए पुस्तक के अंत में देखिए

ख़य्याम की मधुशाला

फ़िट्ज़जेरल्ड कृत 'रुबाइयात उमर ख़य्याम' के
प्रथम अंग्रेज़ी अनुवाद का
पद्यबद्ध हिंदी रूपांतर

बच्चन

दूसरा संस्करण
प्रथम बार मूल अंग्रेज़ी, टिप्पणी तथा बच्चन लिखित भूमिका सहित

सुषमा निकुंज
इलाहाबाद

प्रकाशक
सुषमा-निकुंज
प्रयाग

पहला संस्करण—अप्रैल, १९३५
दूसरा संस्करण—अक्टूबर, १९४०

मूल्य
सजिल्द २॥)
अजिल्द २)

मुद्रक
गोपीलाल दीक्षित, दीक्षित प्रेस,
इलाहाबाद

विज्ञापन

यों तो कहने को यह ख़य्याम की मधुशाला का दूसरा संस्करण है किंतु कई अर्थों में यह संस्करण सर्वथा मौलिक और नवीन है।

इस बार हम हिंदी अनुवाद के साथ ही साथ मूल अंग्रेज़ी भी दे रहे हैं। हमें पता है कि बच्चन की जनता केवल हिंदी जानने वालों की नहीं है; उसमें अधिकांश में अंग्रेज़ी से सुपरिचित लोग हैं, इस कारण अंग्रेज़ी का भार व्यर्थ हिंदीवालों पर थोपने का दोष हमें न दिया जाना चाहिए।

प्रत्येक देश की भाषा के अपने प्रतीक, अपने मुहावरे तथा अपनी ऐतिहासिक अथवा काल्पनिक कथाएँ होती हैं जिनका प्रयोग लेखकगण अपनी रचनाओं में किया करते हैं। 'रुबाइयात

उमर ख़य्याम' में भी उनका प्रयोग हुआ है। इस बार हम ऐसे विशेष प्रयोगों और प्रसंगों पर बच्चन लिखित एक टिप्पणी भी दे रहे हैं जिससे कविता को समझने में साधारण पाठकों को सुगमता होगी। हमारे सुयोग्य पाठकों को इनकी आवश्यकता शायद ही हो। हमें आशा है कि वे साधारण पाठकों की सुविधा का ध्यान कर हमारी इस धृष्टता के लिए हमें क्षमा करेंगे।

पर इस संस्करण की जो सबसे बड़ी विशेषता है वह है बच्चन लिखित भूमिका। बच्चन आज दस बरसों से बराबर कविता लिखते हैं पर अब तक उन्होंने अपनी कविता के विषय में कभी कोई बात नहीं लिखी। उनके पाठकों ने प्रायः इस विषय में उनसे कुछ सुनने की इच्छा रक्खी है परंतु उन्होंने कविता आगे रख दी है और स्वयं चुप रहे हैं। इसमें संदेह नहीं कि उनकी कविता स्वयं बहुत कुछ बोलती है। फ़िर भी अपने अनुवाद के विषय में आज उन्होंने कुछ कहा है। चलिए श्री गणेश तो हुआ, हमें आगे के लिए आशा रखनी चाहिए। हमारा ध्यान है कि इस भूमिका से पाठक उमर ख़य्याम को ज़्यादा अच्छी तरह समझेंगे और उनकी कविता का अधिक आनंद ले सकेंगे।

इस संस्करण में प्रकार में परिवर्तन के साथ आकार भी हमने बढ़ा दिया है। मूल्य में भी हमें वृद्धि करनी पड़ी है, परंतु इतनी विशेषताएँ जोड़ देने पर, हमें आशा है, हमारे पाठक मूल्य वृद्धि की शिकायत न करेंगे। यह खुशी की बात है कि इस

पुस्तक की आकारवृद्धि के साथ बच्चन की समस्त रचनाएँ एक ही साइज़ (डबल क्राउन १६ पेजी) में हो गई हैं।

हाँ एक बात और, अनुवाद में बच्चन ने कई स्थलों पर संशोधन तथा परिवर्तन किए हैं। फिट्ज़जेरल्ड भी अपने अनुवाद में प्रत्येक संस्करण में संशोधन करते गए थे पर समालोचकों ने उनके प्रथम अनुवाद को ही सर्वश्रेष्ठ निर्धारित किया। पता नहीं बच्चन के संशोधनों पर समालोचकों की सम्मति क्या होगी, पर अभी तो बच्चन ने उन संशोधनों को उपस्थित कर देने का ही आग्रह किया है।

हम बच्चन के पाठकों से अनुरोध करेंगे कि यदि पुस्तक का प्रथम संस्करण उनके पास हो तो भी वे इस संस्करण की एक प्रति अपने पास रक्खें। हम विश्वास दिलाते हैं कि उन्हें पछताना नहीं पड़ेगा।

हम शीघ्र ही बच्चन की कई प्रारंभिक और नवीनतम रचनाएँ आपके सामने उपस्थित करेंगे।

हमारी सफलता आपके सहयोग पर ही निर्भर है।

—प्रकाशक

संबोधन

मधुरे,

मैं तो तेरे प्रिय चरणों में चढ़ाने के लिए सर्वदा अपनी हृदय-वाटिका के सुमन ही लाता हूँ। उन्हीं रूप-रहित, रंग-हीन, सौरभ-विहीन पुष्पों को स्वीकार करके तेरी प्रसन्नता इतनी होती है, मानो तुझे नंदन-उपवन के सर्वश्रेष्ठ प्रसून मिल गए हों! इसी कारण तो बार-बार अपने कलि-कुसुमों से तेरे चरणों को गुदगुदाने का मुझे साहस होता है। पर यह साहस इतना बढ़ गया है, कि कभी-कभी अपनी वाटिका के कुश-कंटक भी लाकर तेरे चरणों में चुभा देता हूँ—किसी और भाव से नहीं, केवल अपने बाल-कौतूहलवश यह देखने के लिए कि कितने कोमल हैं तेरे चरण!... आह मेरे! पर कभी तूने 'सी' नहीं की। मैंने तेरा मुँह देखा, वह तो इन कंटकों से भी उतना ही प्रसन्न था, जितना सुमनों से। मुझे विश्वास हुआ कि जब जीवन-वाटिका प्रसून-रहित हो जायगी, तब भी मैं तेरी पूजा कर सकूँगा—इन्हीं काँटों से; और जब तक जीवन है, इनकी कमी कहाँ! प्रतिज्ञा की, अपने काँटे चुभाऊँगा, दूसरों के फूल न चढ़ाऊँगा। फिर भी, आज किसी दूसरे के प्रसून, जो किसी पर चढ़ चुके हैं और वह भी सदियों पूर्व, लिए हुए तेरे सामने खड़ा हूँ। किंतु, यह मैंने अपनी इच्छा से नहीं किया—तेरी आज्ञा थी, 'रुबाइयात उमर ख़य्याम' का रूपांतर चाहिए। तैयार है—अवश्य, कुछ विलंब से। जीवन अगणित शुष्क कर्तव्य-कर्मों से भरा है। प्रेम की सरसता से कार्य करना कितना सुखद,

कितना मधुर, कितना प्रिय और कितना सुंदर है; पर, ऐसा संसार, जिसमें साँस लेने से लेकर समुद्र मथने तक का सारा काम प्रेम की ही सरसता से हो, उसी समय रचा जा सकता है जब, नियति से मिलकर एक षड्यंत्र रचा जाय और इस वर्तमान दुखद संसार को तोड़-फोड़-कर चकनाचूर कर दिया जाय; किंतु नियति अपना घूँघट उठाकर कब कुछ बोलने देगी ! ख़ैर, इन्हीं जीवन के नीरस कार्यों से छुट्टी पाकर आज यह तेरी आज्ञा पालन कर सका हूँ। स्वीकार कर। मेरी प्रतिज्ञा जाय तो जाय, तेरी आज्ञा रहे। इन फूलों पर अपने अश्रु-विंदु छिड़क-छिड़ककर तथा इनको अपने उच्छ्वासों से फूँक-फूँककर ताज़ा बनाने का मैंने प्रयत्न किया है। प्रयत्न से अधिक मेरे वश में और क्या है ?

इस कार्य को पूर्ण करने में तेरी आज्ञा ने नशे का-सा काम किया है। इसी से, इन पंक्तियों को लिखते समय एक अनोखी उमंग थी, एक अनूठा उत्साह था, एक निराला उल्लास था, एक विलक्षण स्फूर्ति थी, एक विचित्र उन्माद था। तेरी आज्ञा में ऐसा नशा हो, इस पर मुझे आश्चर्य नहीं। क्या तू स्वयं एक मदिरा नहीं, जिसके लिए कितने दिनों से मैं एक उमर ख़य्याम बन गया हूँ। इस कार्य ने मुझे पूर्ण आनंद दिया है। इससे तेरा विनोद हो।

बस, विदा, प्यार !

१४ जून, '३३

तेरे आशीर्वाद का
अभिलाषी
'मैं'

ख़य्याम की मधुशाला

Rubaiyat of Omar Khayyam

OF

Naishapur

ख़य्याम की मधुशाला

[१]

उषा ने फेंका रवि-पाषाण
निशा-भाजन में, जल्दी जाग,
प्रिये ! देखो पा यह संकेत
गए कैसे तारक-दल भाग !
और देखो तो उठकर, प्राण !
अहेरी ने पूरब के लाल
फँसा ली सुल्तानी मीनार
बिछा कैसा किरणों का जाल !

1

AWAKE ! for Morning in the Bowl of Night
Has flung the Stone that puts the Stars to Flight :
And Lo ! the Hunter of the East has caught
The Sultān's Turret in a Noose of Light.

[२]

उषा ने ले अँगड़ाई, हाथ
लिए जब नभ की ओर पसार,
स्वप्न में मदिरालय के बीच
सुनी तब मैंने एक पुकार—
"उठो, मेरे शिशुओ नादान !
बुझा लो पी-पी मदिरा भूख,
नहीं तो तन-प्याली की शीघ्र
जायगी जीवन-मदिरा सूख।"

II

DREAMING when Dawn's Left Hand was in the Sky
I heard a Voice within the Tavern cry,
"Awake, my Little ones, and fill the Cup
"Before Life's Liquor in its Cup be dry."

[३]

श्रवणकर अरुण-शिखा-ध्वनि कान
उठे यात्री सब साथ पुकार,
पड़े थे जो मदिरालय घेर—
"अरे, जल्दी से खोलो द्वार!
नहीं है क्या तुमको मालूम
खड़ी जीवन-तरणी क्षण चार,
बहुत संभव है जा उस पार
न फिर यह आ पाए इस पार।"

III

AND, as the Cock crew, those who stood before
The Tavern shouted—"Open then "the Door!
"You know how little while we have to "stay,
"And, once departed, may return no more."

[४]

नई तरु-आभा, नवल समीर
जनाते, आया नूतन वर्ष,
जर्जरित इच्छाएँ भी आज
पा रहीं यौवन का उत्कर्ष।
मनीषी भोग रहे एकांत,
एक मधुऋतु उनके भी पास—
ज्वलित कर मूसा का तरु-ज्योति,
समीरण ईसा का उच्छ्वास।

IV

NOW the New Year reviving old Desires,
The thoughtful Soul to Solitude retires,
Where the WHITE HAND OF MOSES on the Bough
Puts out, and Jesus from the ground suspires.

[५]

सभी पाटल-पुष्पों के साथ
अरम-आराम हुआ बर्बाद !
रही जमशेदी प्याले सात—
चक्रवाले की किसको याद ?
मगर अब भी लहराते बाग़
सलिल के कूलों पर छविमान,
मगर अब भी मिट्टी का पात्र
कराता माणिक-मधु का पान।

V

IRĀM indeed is gone with all its Rose,
And Jamshȳd's Sev'n-ring'd Cup where no one knows;
But still the Vine her ancient Ruby yields,
And still a Garden by the Water blows.

[६]

युगों से मौन हुआ दाऊद,
कभी था जिसका सुमधुर गान,
मगर बुलबुल अब भी स्वर्गीय
स्वरों में छेड़ सुरीली तान,
सुना जाती पाटल को नित्य—
"सुरा पी, मधु पी, मदिरा लाल!"
जिसे पीकर हो जाएँ शीघ्र
गुलाबी उसके पीले गाल।

VI

AND David's Lips are lock't; but in divine
High piping Pehlevi, with "Wine! "Wine! Wine!
"*Red* Wine!"—the Nightingale cries to the Rose
That yellow Cheek of her's to' incarnadine.

[७]

वसंती ज्वाल-अनिल में आज
पिलाकर मधु मदिरा साह्लाद,
उड़ा दो अपने कर के राख
हृदय के पश्चात्ताप-विषाद।
    काल-पक्षी के पर दिन-रात,
    उसे परिमित पथ करना पार;
प्रिये ! तुम करतीं व्यर्थ विलंब,
उड़ा, लो, वह आता पर मार !

VII

COME, fill the Cup, and in the Fire of
    Spring
  The Winter Garment of Repentance
    fling :
The Bird of time has but a little way
To fly—and Lo! the Bird is on the Wing.

[८]

कली-कुसुमों के वन के बीच
पाँव रखता है ज्योंही प्रात,
कली-दल खिल उठता अनजान,
कुसुम-दल झर पड़ता अज्ञात।
अरे, आता जो आज वसंत
सजा पाटल से अपने हाथ,
हमारे क़ैकुबाद — जमशेद
जायगा ले कल अपने साथ।

VIII

AND look—a thousand Blossoms with
the Day
Woke—and a thousand scatter'd into
Clay:
And this first Summer Month that brings
the Rose
Shall take Jamshyd and Kaikobad away.

[९]

सोचकर क़ैख़ुसरू का भाग्य
और कर क़ैकुबाद की याद,
जिन्हें संसार गया है भूल,
समय केवल करना बर्बाद।
बुलाए हातिम दे-दे भोज,
उठाए रुस्तम रण को हाथ;
न करके उनकी कुछ परवाह
प्रिये, तुम आओ मेरे साथ।

IX

BUT come with old Khayyām, and leave the Lot
Of Kaikobād and Kaikhosrū forgot:
Let Rustum lay about him as he will,
Or Hātim Tai cry Supper—heed them not.

[१०]

चलो, चलकर बैठें उस ठौर,
बिछी जिस थल मखमल-सी घास,
जहाँ जा शस्य-श्यामला भूमि
धवल मरु के बैठी है पास,
जहाँ कोई न किसी का दास,
जहाँ कोई न किसी का नाथ,
नृपति महमूद सिहाए भाग
जहाँ यदि हमको देखे साथ।

X

WITH me along some Strip of Herbage strown
That just divides the desert from the sown,
Where name of Slave and Sultān scarce is known,
And pity Sultān Mahmūd on his Throne.

[११]

घनी सिर पर तरुवर की डाल,
हरी पाँवों के नीचे घास,
बग़ल में मधु मदिरा का पात्र,
सामने रोटी का दो ग्रास,
सरस कविता की पुस्तक हाथ,
और सब के ऊपर तुम प्राण !
गा रहीं छेड़ सुरीली तान,
मुझे अब मरु, नंदन उद्यान !

XI

HERE with a Loaf of Bread beneath the Bough,
A Flask of Wine, a Book of Verse—and Thou
Beside me singing in the Wilderness—
And Wilderness is Paradise enow.

[१२]

सुना मैंने, कहते कुछ लोग—
मधुर जग पर मानव का राज !
और कुछ कहते—जग से दूर
स्वर्ग में ही सब सुख का साज !
दूर का छोड़ प्रलोभन, मोह,
करो, जो पास उसीका मोल,
सुहाने भर लगते हैं, प्राण,
अरं, ये दूर-दूर के ढोल !

XII

"HOW sweet is mortal Sovranty !"—
think some :
Others—"How blest the Paradise
"to come !"
Ah, take the Cash in hand and wave the
Rest ;
Oh, the brave Music of a *distant* Drum !

[१३]

खिली जो अपने चारों ओर,
सुनो, क्या कहती पाटल-माल—
'विहँस-हँसकर उपवन के बीच
लूटती मोती मैं इस काल।
रेशमी झोली अपनी फाड़
अभी इस वन में दूँगी फेंक,
और अपनी निधियाँ अनमोल
लुटा दूँगी मैं क्षण में एक।'

XIII

LOOK to the Rose that blows about us —"Lo,
"Laughing," she says, "into the World "I blow:
"At once the silken Tassel of my Purse
"Tear, and its Treasure on the Garden "throw."

[१४]

जगत की आशाएँ जाज्वल्य,
लगाता मानव जिन पर आँख,
न जाने सब की सब किस ओर,
हाय ! उड़ जातीं बनकर राख ।
किसी की यदि कोई अभिलाष
फली भी, तो वह कितनी देर ?
धूसरित मरु पर हिम-कण-राशि
चमक पाती है जितनी देर ।

XIV

THE Worldly Hope men set their Hearts upon
Turns Ashes—or it prospers; and anon,
Like Snow upon the Desert's dusty Face
Lighting a little Hour or two—is gone.

[१५]

समेटा जिन कृपणों ने स्वर्ण,
सुरक्षित रक्खा उसको मूँद,
लुटाया, और, जिन्होंने ख़ूब,
लुटाते जैसे बादल बूँद,
गड़े दोनों ही एक समान,
हुए मिट्टी दोनों के हाड़,
न कोई हो पाया वह स्वर्ण,
जिसे देखें फिर लोग उखाड़।

XV

AND those who husbanded the Golden Grain,
And those who flung it to the Winds like Rain,
Alike to no such aureate Earth are turn'd
As, buried once, Men want dug up again.

[१६]

जीर्ण जगती है एक सराय,
दिवा-निशि जिसके द्वार विशाल,
खोलती एक उषा उठ प्रात,
दूसरा, संध्या, सायंकाल।
यहाँ आ बड़े-बड़े सुल्तान,
बड़ी थी जिनकी शौकत-शान,
न जाने कर किस ओर प्रयाण
गए, बस दो दिन रह मेहमान !

XVI

THINK, in this batter'd Caravanserai
Whose Doorways are alternate Night and Day,
How Sultān after Sultān with his Pomp
Abode his Hour or two, and went his way.

[१७]

जहाँ था जमशेदी दरबार,
शान से होता था मधुपान,
वहाँ स्वच्छंद घूमते सिंह,
वहाँ निर्भीक भूकते श्वान !
और. वह बादशाह बहराम,
अहेरी जो था जग-विख्यात,
पड़ा निद्रा में आज अचेत
गधे की सिर पर खाता लात !

XVII

THEY say the Lion and the Lizard keep
The Courts where Jamshyd gloried and drank deep;
And Bahram, that great Hunter—the Wild Ass
Stamps o'er his Head, and he lies fast asleep.

[१८]

वही होते अति लाल गुलाब,
जड़ें जिनकी कर पातीं पान
गड़े अवनीपतियों का ख़ून !—
समझ यह, आता मुझको ध्यान,
हाय ! वन की हर संबुल-वेलि,
रही जो हिल-खिल आज समोद,
किसी सुमुखी की कुंतल-राशि,
पड़ी जो गिर उपवन की गोद !

XVIII

I SOMETIMES think that never blows so red
The Rose as where some buried Cæsar bled;
That every Hyacinth the Garden wears
Dropt in its Lap from some once lovely Head.

[१९]

अरे, यह कितने कोमल पात !—
चुंबनों से अपने अम्लान
ढक रहे जो सरिता का कूल
विचरते हम-तुम जिस पर, प्राण !
धरो धीरे से इस पर पाँव,
कौन जाने, हो सकता, प्राण !
किन्हीं मृदु अधरों को ही चूम
उगे हों यह पौधे अनजान !

XIX

AND this delightful Herb whose tender Green
Fledges the River's Lip on which we lean—
Ah, lean upon it lightly ! for who knows
From what once lovely Lip it springs unseen !

[२०]

पिलाकर प्यारी मदिरा आज
नशे में इतना कर दो चूर,
भविष्यत के भय जाएँ भाग,
भूत के दारुण दुख हों दूर।
प्रिये, लेना मत कल का नाम,
नहीं कल पर मुझको विश्वास;
अरे, कल दूर, एक क्षण बाद
काल का मैं हो सकता ग्रास!

XX

AH, my Beloved, fill the Cup that clears
To-DAY of past Regrets and future Fears—
To-morrow?—Why, To-morrow I may be
Myself with Yesterday's Sev'n Thousand Years.

[२१]

अरे, वे सुंदरतम, वे श्रेष्ठ,
जिन्हें हम करते इतना प्यार,
क्रूर-कटु काल-कर्म्म के, हाय !
हो गए कितने शीघ्र शिकार !
न पी पाए थे प्याले चार,
गया उनका जीवन-मधु सूख,
चले करने विश्राम अनंत
लिए निज अरमानों की भूख !

XXI

LO! some we loved, the loveliest and best
That Time and Fate of all their Vintage prest,
Have drunk their Cup a Round or two before,
And one by one crept silently to Rest.

[२२]

उन्होंने छोड़ा जो उद्यान,
हमारा वह आनंद-निवास,
वहाँ सज प्रकृति वसंती साज
हृदय में भरती हास-हुलास।
करें उनपर रँगरेली आज,
जहाँ वे, पर, जाना उस ठौर;
हमारे ऊपर भी रँगरेल
मचाने को आएँगे और।

XXII

AND we, that now make merry in the Room
They left, and Summer dresses in new Bloom,
Ourselves must we beneath the Couch of Earth
Descend, ourselves to make a Couch—for whom?

[२३]

अरे, अब भी जो कुछ है शेष,
भोग वह सकते हम स्वच्छंद,
राख में मिल जाने के पूर्व
न क्यों कर लें जी भर आनंद ?
गड़ेंगे जब हम होकर राख
राख में, तब फिर कहाँ वसंत !
कहाँ स्वरकार, सुरा, संगीत !
कहाँ इस सूनेपन का अंत !

XXIII

AH, make the most of what we yet may spend,
Before we too into the Dust decend;
Dust into Dust, and under Dust, to lie,
Sans Wine, sans Song, sans Singer, and—sans End!

[२४]

भोगने को होते तैयार
बहुत से वर्तमान संसार,
पहुँचने को आगामी स्वर्ग
बहुत से सहते कष्ट अपार;
अँधेरे की चढ़कर मीनार
मुअज़्ज़िन यह करता आह्वान—
"रहेगा दोनों ओर निराश,
भटक मत, रे मानव नादान !"

XXIV

ALIKE for those who for TO-DAY prepare,
And those that after a TO-MORROW stare,
A Muezzīn from the Tower of Darkness cries
"Fools! your Reward is neither Here nor "There!"

[२५]

स्वर्ग-जग पर करते शास्त्रार्थ
जता विद्वत्ता का अभिमान,
अरे, कल जो सब पंडित-विज्ञ,
गड़े मूढ़ों के आज समान।
कुचल दी जाने को सब ओर
गई दी उनकी वाणी छींट,
बंद करने को मुख वाचाल
गई दी मिट्टी उनमें पीट।

XXV

WHY, all the Saints and Sages who discuss'd
Of the Two Worlds so learnedly, are thrust
Like foolish Prophets forth; their Words to Scorn
Are scatter'd and their Mouths are stopt with Dust.

[२६]

प्रिये, आ बैठो मेरे पास,
सुनो मत क्या कहते विद्वान,
यहाँ निश्चित केवल यह बात—
रहा हो जीवन का अवसान।
यहाँ निश्चित केवल यह बात,
और सब झूठ और निर्मूल—
सुमन जो आज गया है सूख,
सकेगा वह न कभी फिर फूल!

XXVI

OH, come with old Khayyam, and leave the Wise
To talk; one thing is certain, that Life flies;
One thing is certain, and the Rest is Lies;
The Flower that once has blown for ever dies.

[२७]

पंडितों-विद्वानों के पास
गया यौवन में बार अनेक
स्वयं मैं उत्सुकता के साथ
समझने उनका तर्क-विवेक।
युक्तियाँ भूल-भुलैयाँ एक
लगीं, जिसमें हिर-फिर कर, प्राण!
उसी ड्योढ़ी के पहुँचा पास,
किया था जिस पर से प्रस्थान!

XXVII

MYSELF when young did eagerly frequent
Doctor and Saint, and heard great Argument
About it and about: but evermore
Came out by the same Door as in I went.

[२८]

ज्ञानियों को ले अपने साथ
ज्ञान के मैंने बोए बीज,
उगाने का करते श्रम-यत्न
उठा मेरा तन-प्राण पसीज;
और, इस खेती के फल रूप
यही कहने को मेरे पास—
"लिए आया था अश्रु-प्रवाह,
छोड़ता जाता हूँ उच्छ्वास !"

XXVIII

WITH them the Seed of Wisdom did I sow,
And with my own hand labour'd it to grow :
And this was all the Harvest that I reap'd—
"I came like Water, and like Wind I go."

[२६]

अरे, आया क्यों जग के बीच ?
कहाँ से तृण-सा मुझको तोड़,
बहा लाई है कोई धार,
गई जो जगती-तट पर छोड़ ?
जगत क्यों देना होगा छोड़ ?
कहाँ को, रज-कण मुझको जान,
उड़ा ले जाएगा दिन एक
किसी मरु का पवमान महान ?

XXIX

INTO this Universe, and *why* not knowing,
Nor *whence*, like Water willy-nilly flowing:
And out of it, as Wind along the Waste,
I know not *whither*, willy-nilly blowing.

[३०]

न पूछा फेंक दिया इस ओर,
हमें समझा इतना निरुपाय !
न पूछा, खींच लिया उस ओर,
बड़ा यह तो हम पर अन्याय !
प्रिये ! प्याले पर प्याला ढाल
बढ़ा दो इतना मद-उन्माद,
न जाए जन्म-निधन पर ध्यान,
न आए अन्यायी की याद।

XXX

WHAT, without asking, hither hurried *whence?*
And, without asking, *whither* hurried hence!
Another and another Cup to drown
The Memory of this Impertinence!

[३१]

उड़ा ऊपर भू-कंदुक छोड़,
किए सातो नभ-मंडल पार,
पहुँच शनि-सिंहासन के पास
दिए उसपर अपने पग धार;
राह में सुलभा डालीं, प्राण !
समस्याओं की गाँठ अनेक;
'कर्म्म का चक्र, मनुज की मृत्यु'
रही अनबूझ पहेली एक।

XXXI

UP from Earth's Centre through the
Seventh Gate
I rose, and on the Throne of Saturn
sate,
And many Knots unravel'd by the Road;
But not the Knot of Human Death and
Fate.

[३२]

काल था बैठा बंद कपाट
किए, जिसको न सका मैं खोल,
नियति बैठी थी घूँघट मार,
उठा जिसको न सका मैं बोल।
हुआ केवल क्षण-भर आभास
हो रही कुछ 'मैं-तू' की बात,
और, प्रेयसि, उसके पश्चात
हो गई वह भी लय अज्ञात।

XXXII

THERE was a Door to which I found no Key:
There was a Veil past which I could not see:
Some little Talk awhile of ME and THEE
There seem'd—and then no more of THEE and ME.

[३३]

मिले दिखलाने को पथ सूर्य्य,
चंद्र, तारक-दल-दीप अनेक
जिसे, उस नभ का कर आह्वान
प्रश्न पूछा तब मैंने एक—
"नियति ने कौन दिया है दीप,
जिसे ले उसकी लघु संतान
न भटके अंधकार में भूल ?"
कहा—'अंधी मति दीपक मान।"

XXXIII

THEN to the rolling Heav'n itself I cried,
Asking, "What Lamp had Destiny to "guide
"Her little Children stumbling in the "Dark ?"
And—"A blind Understanding !" Heav'n replied.

[३४]

मृत्तिका की प्याली की ओर
झुका तब तज सब वाद-विवाद,
कहीं पा जाऊँ इसमें ही न
मर्म-मय जीवन का कुछ स्वाद।
होठ से होठ लगा यह बोल
उठी, "जब तक जी, कर मधुपान;
कौन आया फिर जग में लौट
किया जिसने जग से प्रस्थान?"

XXXIV

THEN to the earthen Bowl did I ad-
journ
My Lip the secret Well of Life to
learn:
And Lip to Lip it murmur'd—"While
"you live
"Drink!—for once dead you never shall
"return."

[३५]

हाय ! बोली जो प्याली आज
मंद अस्फुट शब्दों में चार,
रही होगी यह मूर्ति सजीव
कभी करती आनंद-विहार;
इन्हीं जिन जड़ अधरों से आज
रहा हूँ कर मैं मधु का पान,
हुआ होगा कितने रसपूर्ण
चुंबनों का आदान-प्रदान !

XXXV

I THINK the Vessel, that with fugitive
Articulation answer'd, once did live,
And merry-make; and the cold Lip I kiss'd
How many Kisses might it take—and give !

[३६]

हृदय में उठती क्यों यह बात ?
एक दिन जब था संध्याकाल,
घूमते जा पहुँचा मैं हाट,
देखता क्या हूँ, एक कुलाल
बनाने को ऐसे ही पात्र
थपकता है मिट्टी पर हाथ,
मिली मिट्टी में जीभ कराह
रही है, "आह ! दया के साथ !"

XXXVI

FOR in the Market-place, one Dusk of
Day,
I watch'd the Potter thumping his wet
Clay :
And with its all obliterated Tongue
It murmur'd—"Gently, Brother, gently,
"pray !"

[३७]

करो प्याला मदिरा से पूर्ण,
लाभ क्या बार-बार यह चेत,
खड़े हम जीवन-धारा बीच,
खिसकती पद-तल से पल-रेत;
एक कल विश्व-पाश से दूर,
एक कल काट चुका जग-फंद;
करो मत उनका चिंतन आज,
आज यदि कटता है सानंद।

XXXVII

AH, fill the Cup:—what boots it to repeat
How Time is slipping underneath our Feet:
Unborn TO-MORROW, and dead YESTERDAY,
Why fret about them if TO-DAY be sweet!

[३८]

अरे, यह विस्मृति का मरुदेश
एक विस्तृत है, जिसके बीच
खिंची लघु जीवन-जल की रेख,
मुसाफ़िर ले होठों को सींच !
एक क्षण ! जल्दी कर ! ले देख,
बुझे नभ-दीप, किधर पर भोर ?
कारवाँ मानव का कर कूच
बढ़ चला शून्य उषा की ओर !

XXXVIII

ONE Moment in Annihilation's Waste,
One Moment, of the Well of Life to taste—
The Stars are setting and the Caravan
Starts for the Dawn of Nothing—Oh, make haste !

[३६]

अरे, यह सारे व्यर्थ प्रयत्न !
अरे, यह सारे व्यर्थ विवाद !
अरे, यह सारी खोज अनंत
तुम्हें देगी केवल अवसाद।
सुनो, जीवन-उपवन के बीच
मधुर फल केवल यह अंगूर;
शेष तरु या तो हैं फल हीन
रहे फल या कडुए फल दूर।

XXXIX

HOW long, how long, in infinite Pursuit
Of This and That endeavour and dispute ?
Better be merry with the fruitful Grape
Than sadden after none, or bitter, Fruit.

[४०]

बहुत दिन से मित्रों को ज्ञात
भवन में मेरे अति उत्साह—
सहित होता है मदिरा-पान;
किया है मैंने नूतन व्याह।
    कर्कशा, वृद्धा, वंध्या जान
    दिया है 'तर्क-शक्ति' को छोड़,
लिया है सरस, मधुर, सुकुमार
'सुरा-बाला' से नाता जोड़।

XL

YOU know, my Friends, how long since in my House
For a new Marriage I did make Carouse:
Divorced old barren Reason from my Bed,
And took the Daughter of the Vine to Spouse.

[४१]

दर्शनों का सीखा सिद्धांत,
गणित विद्या सीखी दे ध्यान,
खपाया ज्योतिष में मस्तिष्क,
बढ़ाया जड़-जीवों का ज्ञान;
जगत की ज्वाला से मैं तप्त,
जलाशय ज्ञान-विवेक अनेक
मगर सब छिछले, उथले, क्षीण,
मिला बस प्याला गहरा एक।

XLI

FOR "Is" and "IS-NOT" though *with* Rule and Line,
And "UP-AND-DOWN" *without*, I could define,
I yet in all I only cared to know,
Was never deep in anything but—Wine.

[४२]

खुले मदिरालय द्वार समीप
अभी उस दिन की ही है बात,
उतर कर सांध्य गगन से एक
आ गया देव दूत अज्ञात।
    सज रहा था कंधे पर पात्र,
    किसी रस से वह था भरपूर;
कहा उसने लो इसका स्वाद,
कहा मैंने चखकर—'अंगूर!'

XLII

AND lately, by the Tavern Door agape,
Came stealing through the Dusk an Angel Shape
Bearing a Vessel on his Shoulder; and
He bid me taste of it; and 'twas—the Grape!

[४३]

अंगूरी नैयायिक है एक,
पंडितों-सा दे ठीक प्रमाण,
सिद्ध कर सकती है सब झूठ
विवादी मत-पंथों का ज्ञान।
कीमियागर है मदिरा एक
बड़ी ही चतुरा और सुजान,
मलिन जीवन-सीसे को शीघ्र
बना देती कंचन द्युतिमान।

XLIII

THE Grape that can with Logic absolute
The Two-and-Seventy jarring Sects confute:
The subtle Alchemist that in a Trice
Life's leaden Metal into Gold transmute.

[४४]

अंगूरी बलशाली महमूद,
विजयकारी सम्राट महान,
नशे की जोशीली तलवार
हाथ में ले करती प्रस्थान।
डालती तितर-बितर कर काट
काफ़िरों के दल, जो भय-शोक,
बिठा जो मन में दुख की मूर्ति
सत्यनत सुख को रखते रोक।

XLIV

THE mighty Mahmúd, the victorious Lord,
That all the misbelieving and black Horde
Of Fears and Sorrows that infest the Soul
Scatters and slays with his enchanted Sword.

[४५]

न मुझको विद्वानों से काम,
व्यर्थ सब जिनके वाद-विवाद;
न जग के झगड़ों की परवाह,
निरर्थक जिनकी रखना याद।
चलो जग-कोलाहल से दूर
करें हम-तुम एकांत निवास,
उड़ाएँ हम भी उनपर धूल,
हमारा जो करते उपहास।

XLV

BUT leave the Wise to wrangle, and with me
The Quarrel of the Universe let be :
And, in some corner of the Hubbub coucht,
Make Game of that which makes as much of Thee.

[४६]

मच रही यत्र-तत्र-सर्वत्र
निरंतर जग में जो रँगरेल,
नहीं उसका कुछ भी अस्तित्व
ऐंद्रजालिक माया का खेल।
गगन-भूतल की है कंदील,
सूर्य्य है जिसमें दीपक एक।
चतुर्दिक जिसके छाया रूप
घूमते हम जड़-जीव अनेक।

XLVI

FOR in and out, above, about, below,
'Tis nothing but a Magic Shadow-show,
Play'd in a Box whose Candle is the Sun,
Round which we Phantom Figures come and go.

[४७]

अरे, यदि यह मदिरा का पान
चुंबनों का आदान-प्रदान,
शून्य में परिणत हो अनजान
सभी का जिसमें अंत समान,
प्रिये ! तो जब तक तुझमें प्राण
कल्पना से तू ऐसा जान,
वही हम हैं जो होंगे—शून्य—
न होंगे हम कुछ भी कम, प्राण !

XLVII

AND if the Wine you drink, the Lip you press,
End in the Nothing all Things end in —Yes—
Then fancy while Thou art, Thou art but what
Thou shalt be—Nothing—Thou shalt not be less.

[४८]

प्रफुल्लित जब तक पाटल वृंद
सरित का सुनकर कलकल गान,
बैठकर, प्रेयिसि, मेरी गोद
करो माणिक मदिरा का पान।
गरल का प्याला ले यमदूत
तुम्हारे आ जाए जब पास,
उसे भी ले, कर जाना पान,
न होना विचलित और उदास।

XLVIII

WHILE the Rose blows along the River Brink,
With old Khayyām the Ruby Vintage drink :
And when the Angel with his darker Draught
Draws up to Thee—take that, and do not shrink.

[४६]

कर्म्म औ' नियति रहे शतरंज
खेल, जगती की खोल बिसात,
मनुष्यों के मुहरे निःशक्त
बिठा खानों में, जो दिन-रात।
उन्हें चलते वे इस-उस ओर
मारते और कराते मेल,
सभी को काल-कोष्ठ में डाल
ख़तम कर देते अपना खेल।

IL

'TIS all a Chequer-board of Nights and Days
Where Destiny with Men for Pieces plays:
Hither and thither moves, and mates, and slays.
And one by one back in the Closet lays.

[५०]

"नहीं-हाँ" के प्रश्नों से व्यर्थ
दीन कंदुक रखता कब काम ?
खिलाड़ी लुढ़काता जिस ओर
चला जाता दक्षिण या वाम ;
        हमें भी कंदुक-सा ही जान
        वही जिसने फेंका अज्ञात,
लुढ़कने को भू पर हर ओर
हमारी जाने सारी बात।

L

THE Ball no Question makes of Ayes and Noes,
But Right or Left, as strikes the Player goes;
And He that toss'd Thee down into the Field,
He knows about it all—HE knows—HE knows!

[५१]

किसी की लौह लेखनी भाल–
शिला पर लिख जाती कुछ लेख,
न फिर फिरती पीछे की ओर,
लिखा क्या, इतना तो ले देख !
न कम कर देगी आधी पंक्ति
देख सब तेरी भक्ति, विवेक,
न तेरे आँसू की ही धार
सकेगी धो लघु अक्षर एक !

LI

THE Moving Finger writes; and, having writ,
Moves on: nor all thy Piety nor Wit
Shall lure it back to cancel half a Line,
Nor all thy Tears wash out a Word of it.

[५२]

अरे, यह उल्टा प्याला गोल,
जिसे हम कहते हैं आकाश,
तले जिसके हम जीवन-बोझ
उठाते, थकते, तजते श्वास,
उठाओ हाथ न इसकी ओर,
सकेगा कर क्या दीन, सहाय ?
बना जब हम-सा ही निःशक्त
स्वयं यह घूम रहा निरुपाय।

LII

AND that inverted Bowl we call The Sky,
Whereunder crawling coop't we live and die,
Lift not thy hands to *It* for help—for It
Rolls impotently on as Thou or I.

[५३]

ध्येय में रखकर अंतिम रूप
बना मानव का प्रथमाकार,
गया है बोया पहला बीज
उपज अंतिम का रूप विचार।
न्याय के दिन के सायंकाल
सुनाया जाएगा जो लेख,
सृष्टि के प्रथम प्रात में पूर्ण
हो चुका है उसका अवरेख।

LIII

WITH Earth's first Clay They did the Last Man's knead,
And then of the Last Harvest sow'd the Seed :
Yea, the first Morning of Creation wrote
What the Last Dawn of Reckoning shall read.

[५४]

बताता तुझसे एक रहस्य—
लक्ष्य से जब करके प्रस्थान
चले सुर-दूत सूर्य्य पर बैठ.
अश्व जो नभ का है द्युतिमान.
फेंकते अंतरिक्ष के बीच
उपग्रह, ग्रह, नक्षत्र अनेक,
मनाते जैसे बरसा फूल
सृष्टि का पुण्य प्रथम अभिषेक।

LIV

I TELL Thee this—When, starting from the Goal,
Over the shoulders of the flaming Foal
Of Heav'n Parwin and Mushtara they flung,
In my predestin'd Plot of Dust and Soul

[५४]

तभी आ उस मिट्टी के बीच,
डालकर जिसमें मेरा प्राण
बनाई जाने को थी देह,
आज पृथ्वी पर जो गतिमान,
पड़ी अंगूर लता की मूल
किसी के ध्रुव निश्चय को मान;
बनूँ मैं, इसके कितने पूर्व
बनी रुचि मेरी दे तो ध्यान!

LIV

I TELL Thee this—When, starting from the Goal,
Over the shoulders of the flaming Foal
Of Heav'n Parwīn and Mushtara they flung,
In my predestin'd Plot of Dust and Soul
THE Vine had struck a Fibre;

[५५]

फैलकर अब यह चारो ओर
किए है मुझपर शीतल छाँह,
फलित होकर करती मधुदान
मुझे क्या सूफ़ी की परवाह ?
मुझे वह तुच्छ समझता लोह,
न लोहा यह कुंजी बन जाय
खोलने को वह बंद कपाट,
जिसे वह पीट रहा निरुपाय !

LV

THE Vine had struck a Fibre; which about
If clings my Being—let the Sufi flout;
Of my Base Metal may be filed a Key,
That shall unlock the Door he howls without.

[५६]

प्रेम की दिखलाने को राह
भस्म कर या करने को त्तार
झलक दिखलादे सच्ची ज्योति
एक यदि मदिरालय के द्वार,
प्रिये, तो उसपर सकता वार
न जाने कितनी वार स-चाव
मस्जिदें, मंदिर, गिरजे साथ,
जहाँ उसका सब भाँति अभाव।

LVI

AND this I know: whether the one True Light,
Kindle to Love, or Wrathconsume me quite,
One Glimpse of It within the Tavern caught
Better than in the Temple lost outright.

[५७]

मुझे जो पथ करना था पार
बिठाए उसपर प्रेत-पिशाच,
बनाए उसपर गहरे गर्त;
और, आया अब करने जाँच !
पूर्व ध्रुव निश्चय के अनुसार
चला मैं करता व्यर्थ प्रलाप;
देखते तुझे न आती लाज
पतन में मेरे मेरा पाप !

LVII

OH Thou, who didst with Pitfall and with Gin
Beset the Road I was to wander in,
Thou wilt not with Predestination round
Enmesh me, and impute my Fall to Sin ?

[५८]

मलिन मिट्टी की दे दी देह,
न करती फिर यह कैसे पाप?
अदन के उपवन के ही साथ
रचा तूने पापों का साँप!
अरे, वे तो सब तेरे पाप,
कलंकित जिनसे मानव भाल;
क्षमा कर मानव के अपराध
क्षमा अपनी पा ले तत्काल!

LVIII

OH, Thou, who Man of baser Earth didst make,
And who with Eden didst devise the Snake;
For all the Sin wherewith the Face of Man
Is blacken'd, Man's Forgiveness give—and take!

कूज़ा-नामा

[५९]

और भी एक बताता बात—
गया रमज़ान मास था बीत,
आ गया था शुभ संध्या कान्त
न था निकला पर चंद्र पुनीत !
सामने थी मेरे दूकान,
जिसे रखता वह वृद्ध कुम्हार,
बना मिट्टी के पात्र अनेक
गए थे रक्खे बाँध कतार !

KUZA-NĀMA

LIX

LISTEN again. One Evening at the Close
Of Ramazān, ere the better Moon arose,
In that old Potter's Shop I stood alone
With the clay Population round in Rows.

[६०]

मुझे कहते होता आश्चर्य
रहे थे उनमें से कुछ बोल,
मगर कुछ थे ऐसे भी पात्र
नहीं जो मुँह सकते थे खोल!
अचानक बोल उठा वह पात्र
सबों से जो था अधिक अधीर,
"बनाता क्यों है व्यर्थ कुलाल
तुच्छ मिट्टी का क्षणिक शरीर!"

LX

AND, strange to tell, among that Earthen Lot
Some could articulate, while others not:
And suddenly one more impatient cried—
"Who *is* the Potter, pray, and who the "Pot?"

[६१]

इसे सुन पात्र उठा कह एक,
"बनाया मैं न गया था व्यर्थ,
तुच्छ मिट्टी से मेरी देह
बनाई जाने में कुछ अर्थ !
बनाया चतुराई के साथ
मुझे जिसने साँचे में ढाल,
कभी क्या सकता मुझको तोड़
तुच्छ मिट्टी में फिर वह डाल ?"

LXI

THEN said another—"Surely not in
'vain
"My Substance from the common
"Earth was ta'en,
"That He who subtly wrought me into
"Shape
"Should stamp me back to common Earth
"again."

[६२]

तीसरा बोल उठा फिर पात्र,
"चिड़-चिड़ा बालक भी अज्ञान
कभी क्या तोड़ेगा वह पात्र
किया जिससे उसने सुखपान;
बनाया फिर जिसने यह पात्र
सुरुचि औ' शुद्ध प्रेम को जोड़
वही क्या उसको दो दिन बाद
क्रोध में आ, डालेगा तोड़?"

LXII

ANOTHER said—" Why, ne'er a peev-
"ish Boy,
"Would break the Bowl from which he
"drank in Joy;
"Shall He that *made* the Vessel in pure
"Love
"And Fansy, in an after Rage destroy!"

[६३]

न उत्तर में जब कोई बोल
सका, तब कुछ पल के पश्चात
पात्र उनमें से बोला एक,
बना था जिसका टेढ़ा गात,
"देखकर मेरा वक्र स्वरूप
रहे हँस लोग व्यंग के साथ,
मगर क्या मेरा है अपराध
कँपा यदि कुंभकार का हाथ ?"

LXIII

NONE answer'd this; but after Silence spake
A Vessel of a more ungainly Make:
"They sneer at me for leaning all awry;
"What! did the Hand then of the Potter "shake?"

[६४]

एक बोला, "कहते कुछ लोग,
एक है क्रूर-कठोर कलाल,
नरक का काला भयप्रद धूम्र
रहा है रँग उसका मुख-भाल
कड़ी करता पात्रों की जाँच;
अरे, उनकी बातें निस्सार;
हमारा स्वामी सज्जन-साधु
करेगा सुख से बेड़ा पार!"

LXIV

SAID one—"Folks of a surly Tapster
"tell,
"And daub his Visage with the Smoke
"of Hell;
"They talk of some strict Testing of us—
"Pish!
"He's a Good Fellow, and 'twill all be well."

[६५]

दूसरा बोला ले उच्छ्वास,
"गई है मेरी मिट्टी सूख,
भूलकर चिर दिन से मधुपान,
सताती मुझको उसकी भूख।
उसी मधु मदिरा से फिर आज
अगर कोई भर दे यह पात्र,
सरस,मधुमय फिर से हो जाय
शुष्क, नीरस मेरा यह गात्र "

LXV

THEN said another with a long-drawn Sigh,
" My Clay with long oblivion is gone "dry :
"But, fill me with the old familiar Juice,
"Methinks I might recover by-and-bye ! "

[६६]

पात्र जब करते थे यों बात
दिखा निज वाक् शक्ति, निज ओज,
एक ने देख लिया वह चाँद,
रहे थे कर सब जिसकी खोज।
परस्पर धक्के देकर पात्र
उठ कह मित्र, लगाओ कान,
सुनो, आते फिर वाहक लोग,
चलो फिर होगा मदिरा-पान।

× × ×

LXVI

SO while the Vessels one by one were
speaking,
One spied the little Crescent all were
seeking :
And then they jogg'd each other,
" Brother! Brother!
"Hark to the Porter's Shoulder-knot a-
"creaking!"

× × ×

[६७]

प्रिये, मदिरा से देना सींच
अधर मेरे होते मृत-म्लान,
मरूँ तब मदिरा से ही, प्राण !
कराना मेरे शव को स्नान।
अँगूरी पत्तों से मृत देह
मूँद, उनकी ही शैया डाल,
लिटा देना मुझको चुपचाप
किसी मधुमय उपवन के पास

LXVII

AH, with the Grape my fading Life
provide,
And wash my Body whence the Life
has died,
And in a Windingsheet of Vine-leaf
wrapt,
So bury me by some sweet Garden-side.

[६८]

कि गड़ने पर भी मेरी राख
बिछाए सौरभ का मधु पाश
पवन में उपवन में सब ठौर,
जहाँ हो शीतल छाया, घास।
पकड़ ले शेखों के भी पाँव
रहे हों कर जो उपवन पार,
न जा पाएँ आगे की ओर
बिना विश्राम किए पल चार।

LXVIII

THAT ev'n my buried Ashes such a Snare
Of Perfume shall fling up into the Air
As not a True Believer passing by
But shall be overtaken unaware.

[६९]

किया जिनको चिर दिन से प्यार
उन्होंने ही ऐसा व्यवहार
किया, जिससे सारा संसार
मुझे कहता कंचन से क्षार।
दिया छिछले प्याले में बोर
उन्होंने मेरा गौरव-मान,
और दी ख्याति-प्रतिष्ठा बेच
उन्होंने लेकर बस यह गान।

LXIX

INDEED the Idols I have loved so long
Have done my Credit in Men's Eye much wrong:
Have drown'd my Honour in a shallow Cup,
And sold my Reputation for a Song.

[७०]

शपथ ले मैंने निम्संदेह
किए थे पश्चात्ताप अनेक,
मगर, था क्या तब मैं गंभीर ?
मगर, था क्या तब मैं सविवेक ?
और, आया फिर सरस वसंत,
सजा फिर पाटल से निज हाथ;
गए व्रत के वे मेरे तार
टूट उसके आने के साथ।

LXX

INDEED, indeed, Repentance oft before
I swore—but was I sober when I swore?
And then and then came Spring, and Rose-in-hand
My thread-bare Penitence apieces tore.

[७१]

किया मदिरा ने मुझसे घात
मान की पगड़ी मेरी छीन,
मगर, कब उसको समझा हेय
मगर, कब उसको समझा हीन ?
मुझे प्राय: इसपर आश्चर्य
बेचता मद क्यों दीन कलाल,
कहाँ ताँबे के टुकड़े चार !
कहाँ माणिक-सा उसका माल !

LXXI

AND much as Wine has play'd the Infidel,
And robb'd me of my Robe of Honour—well,
I often wonder what the Vintners buy
One half so precious as the Goods they sell.

[७२]

चली जाती मधुऋतु जिस काल
सूख जाते पाटल के प्राण,
अचानक होता, हाय, समाप्त
सरस यौवन का मधुराख्यान !
आज बुलबुल किसको मालूम
बिलखती-रोती उड़ किस ओर
गई, जो कल फूलों के गीत
सुनाती आई थी इस ओर !

LXXII

ALAS, that Spring should vanish with the Rose !
That Youth's sweet-scented Manuscript should close !
The Nightingale that in the Branches sang,
Ah, whence, and whither flown again, who knows !

[७३]

हाय, प्रेयसि ! मिल हम-तुम साथ
नियति के, रच कोई षड्यंत्र,
पकड़ सकते यदि यह संपूर्ण
जगत का दुख-संकट मय जंत्र,
न क्या हम करके चकनाचूर
मिटाते इसका सत्व समूल—
बनाते एक नया संसार
हृदय के स्वप्नों के अनुकूल !

LXXIII

AH Love ! could thou and I with Fate conspire
To grasp this sorry Scheme of Things entire,
Would not we shatter it to bits—and then
Re-mould it nearer to the Heart's Desire !

[७४]

छिटकती नित जो एक समान
कुमुद-जीवन की ज्योत्सने प्राण !
देख, फिर आज उदित हो चंद्र
बनाता नभ-मंडल छविमान।
हाय ! इस उपवन में यह चाँद
न जाने अब से कितनी बार
करेगा आकर मेरी खोज,
रहूँगा मैं जीवन के पार !

LXXIV

AH, Moon of my Delight who know'st no wane,
The Moon of Heav'n is rising once again :
How oft hereafter rising shall she look
Through this same Garden after me—in vain !

[७५]

और तू भी शशि-मुख, पद-रश्मि,
घूम उडु-अतिथि वृंद के बीच,
घास पर होंगे जो नभ-नील,
बहाएगी मद-धार, उलीच
सुरा घट से, पर जा उस ठौर,
जहाँ मैं बैठा करता मान—
सहित, ख़ाली ही प्याली एक
उलटकर धर देगी अनजान !

समाप्त

LXXV

AND when Thyself with shining Foot shall pass
Among the Guests Star-scatter'd on the Grass,
And in thy joyous Errand reach the Spot
Where I made one—turn down an empty Glass !

TMAM SHUD

बच्चन की
अन्य प्रकाशित रचनाओं का
विवरण

सुषमा निकुंज, इलाहाबाद

बच्चन की नवीनतम रचना !

एकांत संगीत

यह कवि की १९३८-३९ में लिखित एक सौ गीतों का संग्रह है। देखने में यह गीत 'निशा निमंत्रण' के गीतों की शैली के प्रतीत होते हैं, परंतु पद, पंक्ति, तुक, मात्रा आदि में अनेक स्थानों पर स्वतंत्रता लेकर कवि ने इनकी एकरूपता में भी विभिन्नता उत्पन्न की है।

कवि ने जिस एकाकीपन का अनुभव निशा निमंत्रण में मुखरित किया था उसकी यहाँ चरम सीमा पहुँच गई है। 'कल्पित साथी' भी साथ में नहीं है। कवि के हृदय में वेदना इतनी घनीभूत हो गई है कि उसे बताने के लिए वातावरण की सहायता की भी आवश्यकता नहीं होती। गीतों का क्रम रचना क्रम के अनुसार होने से कवि की भावनाओं का जैसा स्वाभाविक चित्र यहाँ आपको मिलेगा वैसा और किसी कृति में नहीं।

कवि ने जीवन के एकांत में क्या देखा, क्या अनुभव किया, क्या सोचा, यदि इसे जानना चाहते हैं तो एकांत संगीत को लेकर एकांत में बैठ जाइए।

पृष्ठ संख्या १२८, सजिल्द १।) अजिल्द १)

सुषमा निकुंज, इलाहाबाद

दूसरा संस्करण चल रहा है!

निशा निमंत्रण

यह कवि की १९३७-३८ में लिखित एक सौ गीतों का संग्रह है। 'निशा निमंत्रण' के गीतों से बच्चन की कविता का एक नया युग आरंभ होता है। १३–१३ पंक्तियों में लिखे गए ये गीत विचारों की एकता, गठन और अपनी संपूर्णता में अंग्रेज़ी के सानेट्स की समता करते हैं।

'निशा निमंत्रण' के गीत सायंकाल से आरंभ होकर प्रातः काल समाप्त होते हैं। रात्रि के अंधकार पूर्ण वातावरण से अपनी अनुभूतियों को रंजित कर बच्चन ने गीतों की जो शृंखला तैयार की है वह आधुनिक हिंदी साहित्य के लिए सर्वथा मौलिक वस्तु है। बच्चन ने प्रकृति के जिस दृश्य के साथ जिस वेदना का गठ बंधन कर दिया है वह आपको चिर काल तक स्मरण रहेगी।

रात की काले पृष्ठों वाली पुस्तक में बच्चन की आँखों ने क्या-क्या पढ़ा है। इसे देखना हो तो 'निशा निमंत्रण' पढ़िए।

पृष्ट संख्या १२८, सजिल्द १।) अजिल्द १)

सुषमा निकुंज, इलाहाबाद

चौथा संस्करण चल रहा है

मधुशाला

[मधुशाला पर लिखित रुबाइयों का संग्रह]

मधुशाला में १३५ रुबाइयाँ हैं। हाला, प्याला मधुबाला और मधुशाला के केवल चार प्रतीकों और तुकों को लेकर बच्चन ने अपने कितने भावों और विचारों को इन रुबाइयों में भर दिया है इसे वे ही जानते हैं जिन्होंने कभी मधुशाला उनके मुँह से सुनी या स्वयं पढ़ी है। आधुनिक खड़ी बोली कविता की कोई भी पुस्तक मधुशाला के समान लोकप्रिय नहीं हो सकी, इसमें तनिक भी अतिशयोक्ति नहीं है

देखिए दो संमतियाँ

हंस—हिंदी में मधुशाला बिल्कुल नई चीज़ है। यह श्रेय बच्चन ही को है कि उन्होंने हिंदी कविता में मधुशाला भी सजा दी।

विश्वमित्र—'मधुशाला' सचमुच ही हिंदी में अपने ढंग की एक ही किताब है।

अपनी प्रति शीघ्र ही मँगा लीजिए।

पृ० सं० १००—सजिल्द १।) अजिल्द १)

सुषमा-निकुंज, इलाहाबाद